ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–06
दिनांक– मंगलवार, 20 जनवरी, 2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 23.2 एवं 5.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 56.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 4.9 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.5 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 5.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 11.6 एवं दोपहर में 21.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(21–25 जनवरी, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 21–25 जनवरी, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते है तथा इस अवधि में आमतौर पर मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्का कुहासा छा सकता है।
- अधिकतम तापमान 23 से 25 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पछिया हवा चलने का अनुमान है। औसतन 6–7 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- मक्का की फसल में आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें। सिंचाई के पश्चात 25–30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें, जिससे कम तापमान एवं शीतलहर से फसल को हुए नुकसान को कम किया जा सके।
- पिछात बोई गई गेहूँ की फसल में खरपतवार नियंत्रण को प्राथमिकता दें। यदि फसल में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई दें (पौधों का रंग हल्का पीला पड़ना), तो 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं 12.5 किलोग्राम यूरिया को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।
- बसंतकालीन ईख की रोपाई के लिए मौसम अनुकूल हो रहा है। रोपाई हेतु खेत की तैयारी करें। जुताई के समय 15–20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर डालें। इससे भूमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है।
- आलू की अगेती किस्मों की तैयार फसल की खुदाई कर लें। बीज वाली फसल में ऊपरी लत्तियों की कटाई करें तथा खुदाई से 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म (कजरा पिल्लू) की नियमित निगरानी करें। नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी दवा का 2.5–3.0 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित निगरानी करें। यह कीट पौधों के कोमल भागों का रस चूसता है, जिससे पौधों की बढ़वार रुक जाती है और उपज एवं तेल की मात्रा में कमी आती है। नियंत्रण के लिए डाइमेथोएट 30 ईसी दवा का 1.0 मिली प्रति लीटर पानी की दर से साफ मौसम में छिड़काव करें।
- पिछात फूलगोभी, पत्तागोभी, गाजर, मूली, मटर, बैंगन, टमाटर एवं मिर्च की फसलों में निराई–गुड़ाई एवं सिंचाई करते रहें। रोग–व्याधि से बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम (वेविस्टीन) 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से समान रूप से छिड़काव करें। गरमा सब्जियों की बुआई हेतु खेत की तैयारी करें।
- भिंडी, कद्दू, कदिमा, करेला, खीरा एवं नेनुआँ की बुआई के लिए खेत तैयार करें। स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन हेतु 150–200 क्विंटल सड़ी–गली गोबर खाद प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में अच्छी तरह मिला दें। कटुआ (कजरा पिल्लू) से बचाव हेतु खेत की जुताई के समय क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ 20–30 किलोग्राम बालू में मिलाकर प्रयोग करें।
- विलंब से बोई गई दलहनी फसलों में 2 प्रतिशत यूरिया घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अंतराल पर दो बार करें। अरहर की फसल में फली छेदक कीट की नियमित निगरानी करते रहें।
- दुधारू पशुओं को हरे एवं सूखे चारे के मिश्रण के साथ प्रतिदिन 50 ग्राम नमक, 50–100 ग्राम खनिज मिश्रण तथा संतुलित दाना खिलाएँ।
- जई, बरसीम एवं लूसर्न जैसी खड़ी चारा फसलों की कटाई 25–30 दिन के अंतराल पर करें। प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई करें तथा 10 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।

आज का अधिकतम तापमानः 24.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 4.1 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 8.0 डग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.1 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी